पाठ 3. हम सबका रखवाला

पाठ का परिचय

एक समुद्री तट पर बने एक कॉफ़ी हाउस में बैठे अलग-अलग देशों के यात्रियों में इस बात को लेकर बहस छिड़ गई कि हम सबका रखवाला कौन है। सभी ने अपनी-अपनी तरह से अपनी बात रखी। किसी ने तलवार को, किसी ने ईश्वर को, किसी ने खुदा को तो किसी ने ईसा मसीह को सबका रखवाला बताया। उसी कॉफ़ी हाउस के कोने में बैठा एक अन्य यात्री यह सारी बातें सुन रहा था। उसने अपने मत को स्पष्ट करने के लिए सभी को एक कहानी सुनाई। उस कहानी के माध्यम से उसने यह स्पष्ट कर दिया कि हर व्यक्ति का अपना एक विश्वास होता है जिसके आधार पर वह चीज़ों को देखता है। यह ज़रूरी नहीं कि एक व्यक्ति का विचार दूसरे व्यक्ति के विचार से मेल खाए। ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को न समझ पाने के कारण लोगों में यह भ्रम है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

ईश्वर एक है। अलग-अलग धर्म और जाति के लोग चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारें या किसी भी आकार में ढालें लेकिन उसके अस्तित्व को कोई नहीं बदल सकता। वह एक शक्ति है जो इस संसार को चला रही है।

पाठ का वाचन

कहानी का कक्षा में वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। आवश्यक पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। वाचन करते समय उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़ने को कहें। वाचन के दौरान कठिन शब्दों को रेखांकित करने को कहें। ऐसे प्रत्येक शब्द को तीन-तीन बार लिखने को कहें व श्रुतलेख दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- क्या तुम ईश्वर के अस्तित्व को मानते हो?
- क्या तुम पूजा करने में विश्वास रखते हो?
- ईश्वर के अस्तित्व को कैसे महसूस करते हो?
- आस्तिक और नास्तिक में क्या अंतर है?
- इस दुनिया को उपासना-गृह कहना सही है या गलत?